प्रस्तुतकर्ता

संजय भारती

असिस्टेंट प्रोफेसर -समाजशास्त्र

राजकीय महाविद्यालय जक्खिनी वाराणसी

विषय- समाजशास्त्र

नई शिक्षा नीति - 2020

इकाई –प्रथम

बी.ए. - प्रथम सेमेस्टर(माइनर एंड मेजर)

पुस्तक - समाजशास्त्र के मूल तत्व एवं अवधारणाएं

उपशीर्षक- समाजशास्त्र का अर्थ तथा परिभाषा

स्वघोषणा

(disclaimer/ self-Declaration)

यह सामग्री विशेष रुप से शिक्षण और सीखने को बढ़ाने के शैक्षणिक उद्देश्यों के लिए है। आर्थिक /वाणिज्यिक अथवा किसी अन्य उद्देश्य के लिए इसका उपयोग पूर्णता प्रतिबंधित है। सामग्री के उपयोगार्थ इसे किसी और के साथ वितरित, प्रसारित या साझा नहीं करेंगे और इसका प्रयोग व्यक्तिगत ज्ञान की उन्नति के लिए ही करेंगे। इस कंटेंट में जो जानकारी दी गई है वह प्रमाणित है और मेरे ज्ञान के अनुसार सर्वोत्तम है।

" The content is exclusively meant for academic purpose and for enhancing teaching and learning. Any other used for economic / commercial purpose is strictly prohibited the users of the content shall not distribute, disseminate or share it with anyone else and its use is restricted and advancement of individual knowledge. The information provided in this e-content is authentic and best as per my knowledge."

- **समाजशास्त्र का अर्थ**
- **परिभाषा-**
- *समाजशास्त्र समाज के अध्ययन के रूप में।*
- *समाजशास्त्र सामाजिक संबंधों के अध्ययन के रूप में।*
- *समाजशास्त्र समूहों के अध्ययन के रूप में।*
- *समाजशास्त्र सामाजिक अतःक्रियाओं के अध्ययन के रूप में।*
- *अन्य विद्वानों के अनुसार।*

समाजशास्त्र का अर्थ

समाजशास्त्र अर्थात सोशियोलॉजी दो शब्दों से मिलकर बना है। जिसमें पहला शब्द **लैटिन भाषा** के सोशियस एवं दूसरा शब्द लोगस **ग्रीक भाषा** से लिया गया है। जिसमें सोशियस का अर्थ समाज और लोगस का अर्थ शास्त्र होता है। इस प्रकार समाजशास्त्र का शाब्दिक अर्थ समाज का शास्त्र या समाज का विज्ञान है। समाजशास्त्र का जन्म दो भाषाओं से होने के कारण जॉन स्टूअर्ट मिल ने **अवैध संतान** कहते हुए कहा कि समाजशास्त्र के स्थान पर हमें **इथोलॉजी** अर्थात नीतिशास्त्र शब्द को इस्तेमाल करना चाहिए। लेकिन अधिकांश विद्वानों ने मिल के इस सुझाव को नहीं माना। हरबर्ट स्पेंसर ने समाज के क्रमबद्ध अध्ययन के लिए सोशियोलॉजी नामक पुस्तक की रचना की और कहां की सोशियोलॉजी शब्द की उपयुक्तता के संबंध में आपने लिखा है कि प्रतीकों की सुविधा एवं सूचकता उनकी उत्पत्ति संबंधी वैधता से अधिक महत्वपूर्ण है।

अतः स्पष्ट है कि समाजशास्त्र का अर्थ समाज का या सामाजिक संबंधों का व्यवस्थित एवं क्रमबद्ध ढंग से अध्ययन करने वाले विज्ञान से है।

समाजशास्त्र की परिभाषा

समाजशास्त्र को विभिन्न समाजशास्त्रियों ने अलग-अलग आधार पर अपने अपने दृष्टिकोण से परिभाषित किया है ।

समाजशास्त्र समाज के अध्ययन के रूप में वार्ड, गिड्डिंग्स, समनर, ओडम आदि ने परिभाषित किया इन विद्वानों का मानना है कि समाजशास्त्र को एक ऐसे विज्ञान के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो संपूर्ण समाज का एक समग्र इकाई के रूप में अध्ययन कर सकें।

वार्ड के अनुसार "समाजशास्त्र समाज का विज्ञान है।"

गिड्डिंग्स के अनुसार "समाजशास्त्र समाज का वैज्ञानिक अध्ययन है।"

ओडम के अनुसार "समाजशास्त्र वह विज्ञान है जो समाज का अध्ययन करता है।"

समाजशास्त्र सामाजिक संबंधों के अध्ययन के रूप में कुछ विद्वानों का मानना है कि समाजशास्त्र एक ऐसा विज्ञान है जो सामाजिक संबंधों का व्यवस्थित अध्ययन करता है सामाजिक संबंधों के जाल को ही समाज कहा गया है मनुष्य पारस्परिक जागरूकता और संपर्क के आधार पर विभिन्न व्यक्तियों एवं समूहों के साथ अनेक प्रकार के सामाजिक संबंध स्थापित करता है जब विभिन्न समूह और इकाइयां संबंधित हो जाते हैं तब इन संबंधों के आधार पर समाज का निर्माण होता है । इस तरह का विचार देने वालों में मैकाइवर तथा पेज के अनुसार समाजशास्त्र सामाजिक संबंधों के विषय में है संबंधों के इसी जाल को हम समाज कहते हैं। क्यूबर के अनुसार समाजशास्त्र को मानव संबंधों के वैज्ञानिक ज्ञान की शाखा के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।

मैक्स वेबर के अनुसार "समाजशास्त्र प्रधानता सामाजिक संबंधों कृत्यों का अध्ययन है।"

वान वीज के अनुसार "सामाजिक संबंध ही समाजशास्त्र की विषय वस्तु का एकमात्र वास्तविक आधार है।"

ए. एम. रोज के अनुसार "समाजशास्त्र मानव संबंधों का विज्ञान है।"

समाजशास्त्र समूहों के अध्ययन के रूप में अनेक विद्वानों का मानना है कि व्यक्ति समूह में रहता है तथा विभिन्न गतिविधियों और अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति समूह में ही करता है।

नोब्स, हाइन, फ्लेमिंग के अनुसार "समाजशास्त्र समूहों में लोगों का वैज्ञानिक और व्यवस्थित अध्ययन है।"

जानसन के अनुसार "समाजशास्त्र सामाजिक समूहों का विज्ञान है .....सामाजिक समूह सामाजिक अंतः क्रियाओं की ही एक व्यवस्था है।"

समाजशास्त्र सामाजिक अतःक्रियाओं के अध्ययन के रूप में अंतः क्रिया का तात्पर्य दो या दो से अधिक व्यक्तियों या समूहों का जागरूक अवस्था में एक दूसरे के संपर्क में आना और एक दूसरे के व्यवहारों को प्रभावित करना है। सामाजिक संबंधों के निर्माण का आधार अंतःक्रिया ही है। अनेक विद्वान समाजशास्त्र को सामाजिक अंतः क्रियाओं का विज्ञान मानते है। जैसे

गिलिन और गिलिन के अनुसार व्यापक अर्थ में "समाजशास्त्र व्यक्तियों के एक दूसरे के संपर्क में आने के फलस्वरुप उत्पन्न होने वाली अंतः क्रियाओं का अध्ययन कहा जा सकता है।"

गिन्सवर्ग के अनुसार "समाजशास्त्र मानवीय अंतःक्रियाओं और अंतःसंबंधों उनकी दशाओं और परिणामों का अध्ययन है ।"

जॉर्ज सिमेल के अनुसार "समाजशास्त्र मानवीय अंतःसंबंधों के स्वरूपों का विज्ञान है।"

अन्य विद्वानों के अनुसार भी समाजशास्त्र को परिभाषित किया गया है।

अगस्त काम्टे के अनुसार "समाजशास्त्र सामाजिक व्यवस्था और प्रगति का विज्ञान है।"

मैक्स वेबर के अनुसार "समाजशास्त्र वह विज्ञान है जो सामाजिक क्रियाओं का विश्लेषणात्मक बोध कराने का प्रयत्न करता है।"

सोरोकिन के अनुसार "समाजशास्त्र सामाजिक सांस्कृतिक घटनाओं के सामान्य स्वरूपों प्रकारों और अनेक अंतःसंबंधों का सामान्य विज्ञान है। "

उपरोक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है कि समाजशास्त्र संपूर्ण समाज का एक समग्र इकाई के रूप में अध्ययन करने वाला विज्ञान है जिसमें सामाजिक संबंधों का व्यवस्थित अध्ययन किया जाता है। तथा सामाजिक संबंधों को समझने के लिए सामाजिक क्रिया, सामाजिक अंतः क्रिया एवं सामाजिक मूल्य के अध्ययन पर विशेष बल दिया जाता है।

संदर्भ ग्रंथ-

1. अग्रवाल, डॉ. जी. के., 2017 ,समाजशास्त्र, बी़. ए. प्रथम वर्ष, यस. बी. पी.डी. पब्लिकेशन हाउस,आगरा।

2. रावत, हरीकृष्ण, 2005, समाजशास्त्री चिंतक एवं सिद्धांतकार, रावत पब्लिकेशन, नई दिल्ली।

4.दोस्ती, यस. एल., 2010, आधुनिक समाजशास्त्री विचारक, रावत पब्लिकेशन, नई दिल्ली ।

5.रावत, हरीकृष्ण, 2015, उच्चतर समाजशास्त्रीय विश्वकोश , रावत पब्लिकेशन, नई दिल्ली।

6. शर्मा, एम. एल. एवं शर्मा डी. डी, 2002, समाजशास्त्र, साहित्य भवन पब्लिकेश, आगरा।

Thank-you